पुरस्कार अहंकार की चीज नहीं होता : गगन गिल

साक्षात्कार

■ अभिनव उपाध्याय

नई दिल्ली। हिंदी के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार की घोषणा होने पर प्रसिद्ध साहित्यकार गगन गिल ने कहा कि पुरस्कार अहंकार की चीज नहीं है। इससे विनयशीलता ऊपर आनी चाहिए। उन्होंने बताया कि पुरस्कार के लिए चयनित पुस्तक 'मैं जब तक आयी बाहर' मेरी प्रिय पुस्तक है। इसके अलावा अवाक बहुत पसंद है, देह की मुंडेर पर मेरे निबंधों की किताब है, जो मुझे बहुत प्रिय है।

बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि पुरस्कार की जानकारी होने पर मैं हैरान हो गई थी। मुझे लगा कि साहित्य अकादमी का गलती से नंबर लगा है।

■ विजेताओं को आठ मार्च को एक समारोह में पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा

जीवन परिचय

गगन गिल का जन्म 1959 में दिल्ली में हुआ। 1983-93 के बीच प्रतिष्ठित अखबार समूहों में साहित्य सम्पादन करने के बाद सन 1992-93 में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, अमेरिका में पत्रकारिता की नीमेन फैलो बनीं। 1990 में अमेरिका के सुप्रसिद्ध आयोवा इण्टरनेशनल राइटिंग प्रोग्राम में भारत से आमंत्रित लेखिका रहीं।

प्रमुख कृतियां

पांच कविता संग्रह : एक दिन लौटेगी लड़की (1989), अंधेरे में बुद्ध (1996), यह आकांक्षा समय नहीं (1998), धपक धपक दिल धपक थपक (2003), मैं जब तक आयी बाहर (2018) एवं 4 गद्य पुस्तकें दिल्ली में उनींदे (2000), अवाक (2008), देह की मुंडेर पर (2018), इत्यादि (2018)।

पुरस्कार : भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार (1984), संस्कृति सम्मान (1989), केदार सम्मान (2000), हिन्दी अकादमी साहित्यकार सम्मान (2008) और द्विजदेव सम्मान (2010) से सम्मानित किया गया।

मैं लंबे समय से ग्रेटर नोएडा में रहती हूं, दिल्ली से दूर हूं तो बहुत कम निकलती हूं। मैं सोशल मीडिया पर भी नहीं हूं। फोन आने के बाद से मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है।

यह पूछे जाने पर कि क्या अकादमी लेखकों को पुरस्कार देने में देर कर देती है? उनका कहना था कि पुरस्कारों को देर या जल्द से नहीं देखना चाहिए सही व्यक्ति को मिला कि नहीं मिला इसी पर बात करनी चाहिए, क्योंकि जो सही व्यक्ति है वह पुरस्कार के लिए नहीं लिखता वह अपना काम करता रहता है। यदि उसे मिल जाता है तो वह कृतज्ञ और प्रसन्न महसूस करता है, लेकिन यदि नहीं मिले तो उसे इससे कोई परेशानी नहीं होगी, क्योंकि उनकी दुनिया ही अलग होती है।

मैथिली भाषा में महेन्द्र मलंगिया को सम्मान

नई दिल्ली। साहित्य पुरस्कार अकादमी के सचिव डॉ. के श्रीनिवास राव ने बुधवार को आयोजित संवाददाता सम्मेलन में बताया कि मराठी में सुधीर रसाल को उनकी आलोचना 'विंदांचे गुद्यरूप' के लिए सम्मानित किया जाएगा। इनके अलावा संस्कृत में दीपक कुमार शर्मा (कविता संग्रह), राजस्थानी में मुकुट मणिराज (कविता संग्रह), पंजाबी में पॉल कौर (कविता संग्रह), कश्मीरी में सोहन कौल (उपन्यास) और गुजराती में दिलीप झावेरी (कविता संग्रह), मैथिली में महेन्द्र मलंगिया (निबंध) समेत अन्य को पुरस्कृत किया जाएगा। फिलहाल 21 भाषाओं के लिए पुरस्कारों का ऐलान किया है। बांग्ला, डोगरी और उर्दू भाषाओं का ऐलान बाद में होगा।

रचनाकार सीधे आवेदन कर सकेंगे

नई दिल्ली। साहित्य अकादमी ने अगले साल से अपने सभी पुरस्कारों के लिए आवेदन प्रक्रिया को आसान कर दिया है। अकादमी ने विज्ञापन जारी कर रचनाकारों से आवेदन आमंत्रित करने का निर्णय लिया है। साहित्य अकादमी ने बुधवार को बताया कि अकादमी 24 भारतीय भाषाओं में साहित्य अकादमी पुरस्कार, युवा पुरस्कार, बाल साहित्य पुरस्कार और अनुवाद पुरस्कार प्रदान करती है। सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने कहा कि 2025 से रचनाकार सीधे आवेदन कर सकेगा। इसके बाद संबंधित भाषा की चयन समिति उनकी पुस्तकों पर गौर करेगी। रचनाकार की ओर से प्रकाशक या उनका कोई शुभचिंतक भी आवेदन कर सकेगा।